क्षेत्रीय दलों से जाति, धर्म के मुद्दे पर न उलझे भाजपा

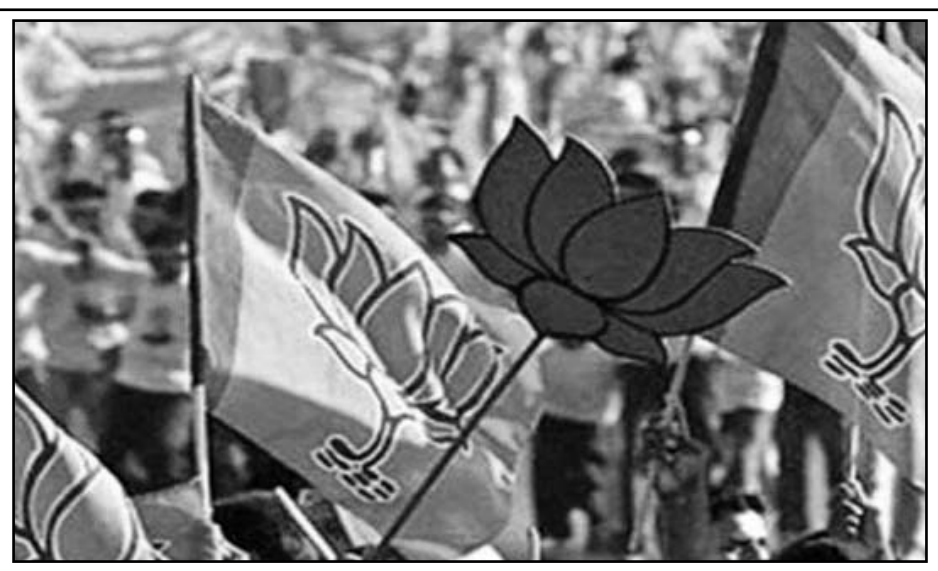

उत्तर प्रदेश में जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव बरतने के आरोप को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, लेकिन भाजपा को यह प्रमुख मुद्दा बनाने से बचना चाहिए क्योंकि भाजपा हिंदू और मुस्लिम की बात करेगी, तो समाजवादी पार्टी पलटवार में विकास की बात करेगी और हिंदू-मुस्लिम के पुराने मुददे के साथ विकास की बात सुनने में ज्यादा अच्छी लगेगी, इसलिए भाजपा को समाजवादी पार्टी द्वारा कराये गये विकास में ही कमियां निकालनी चाहिए। प्रदेश में चल रही योजनाओं और विकास कार्यक्रमों में केन्द्र का हिस्सा कितना है, साथ ही बड़े स्तर पर कौन से कार्यक्रम व योजनायें केंद्र के निर्देश पर चलाये जा रहे हैं, इस सबसे जनता अभी तक अनभिज्ञ है। भाजपा को बताना चाहिए कि उत्तर प्रदेश में कितने प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हैं, उन पर कितने डॉक्टर, फार्मासिस्ट और कंपाउंडर तैनात हैं और कितने केंद्र खुलते हैं। उत्तर प्रदेश की प्राथमिक चिकित्सा झोलाछाप डॉक्टरों के हवाले है। अगर, झोलाछाप डॉक्टरों के कथित क्लीनिक बंद करा दिए जायें, तो वास्तव में उत्तर प्रदेश में बीमारियों को लेकर हाहाकार मच जायेगा, इसी तरह प्राथमिक शिक्षा के बारे में बताना चाहिए कि प्रति स्कूल कितने शिक्षक तैनात हैं, क्योंकि प्राथमिक शिक्षा भी झोलाछाप शिक्षकों के हवाले है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी हाईस्कूल पास लोग प्राथमिक स्कूल चला रहे हैं, जो पढ़ाने की जगह नौनिहालों का भविष्य बर्बाद ही करते दिख रहे हैं।

भाजपा को सस्ते गल्ले की सरकारी दुकान की सच्चाई बतानी चाहिए, जहाँ सिर्फ माफियाराज कायम है। शहरों के आसपास के गांवों में गरीबों को निर्धारित दाम से महंगा सामान खरीदना पड़ रहा है और जो गाँव जिला मुख्यालय से दूर हैं, वहां कोटेदार की इच्छा पर निर्भर है। कोटेदार कई-कई महीने का केरोसिन व राशन स्वयं ही हजम कर जाता है, जिसका हिस्सा ऊपर तक पहुंचता है। सहकारी समितियों की स्थिति यह है कि सहकारी शब्द सिर्फ कागजों में ही शेष रह गया है। वास्तव में समितियों को कर्मचारी-अधिकारी और सहकारिता विभाग से जुड़े नेता काफी पहले ही पचा चुके हैं, इसी तरह केंद्रीय योजना के अंतर्गत चलाये जा आंगनबाड़ी केन्द्रों का उत्तर प्रदेश में बुरा हाल है। पोषाहार कार्यकत्रियों और अफसरों के ही पेट में जा रहा है। बच्चों के टीकाकरण की स्थिति भी भयावह है।

उत्तर प्रदेश सरकार एंबुलेंस सेवा की चर्चा करते हुए उत्साहित नजर आती है, लेकिन उसकी असलियत बताने के लिए इतना ही काफी है कि सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी के विधायक हाजी इरफान की लापरवाही के चलते एंबुलेंस में ही मृत्यु हुई थी, जिसका बदायूं जिले में मुकदमा भी दर्ज है। एंबुलेंस सेवा का जनता से अधिक ठेकेदारों को लाभ मिल रहा है। अगर, सही से जाँच हो जाये, तो यूपी का बड़ा तेल घोटाला सामने आ सकता है। कानून व्यवस्था का आलम यह है कि बीस वर्ष पहले होने वाली आपराधिक वारदातें पुनः घटित होने लगी हैं। डकैती लगभग खत्म हो चली थी, पर समाजवादी पार्टी की सरकार में डकैती की भी वारदातें घटित होने लगी हैं। अपहरण, लूट और राहजनी आम वारदातें कही जाने लगी हैं। प्रदेश भर में बड़ी संख्या में अज्ञात लाशें बरामद हो रही हैं, लेकिन मेडिकल परीक्षण में हत्या की पुष्टि होने के बावजूद मुकदमा दर्ज कर विवेचना तक नहीं की जाती। उत्तर प्रदेश सरकार महिला हेल्पलाइन को लेकर बड़ी ही गद्गद् नजर आती थी, इससे बड़ा उदाहरण अव्यवस्था का और क्या होगा कि उस हेल्पलाइन का ही प्रभारी पीड़ित को फोन पर प्रताड़ित करने लगा। प्रदेश की चारों दिशाओं में ऐसे-ऐसे बवाल हो चुके हैं, जिनमें बड़ी धन और जनहानि हो चुकी है, उन वारदातों के पीड़ित ता-उम्र खून के आंसू रोते रहेंगे, जिसमें मुजफ्फरनगर, शामली और मथुरा कांड सरकार के माथे पर लगे सबसे बड़े कलंक कहे जा सकते हैं।

जमीन पर दिखने वाले विकास कार्यों में सड़कों की बात करें, तो कार्यदायी संस्थाओं में निविदा निकालने की सिर्फ औपचारिकता पूर्ण की जा रही है। आरोप लगते रहे हैं कि संबंधित जिलों के शक्तिशाली नेता, या प्रदेश स्तर से ठेकेदारों के नामों की सूची आती है, जिसके अनुसार कार्यदायी संस्था के अफसर संबंधित ठेकेदारों के बीच कार्यों का बंटवारा कर देते हैं। कार्रवाई करने की बात तो बहुत बड़ी है, कार्यों की गुणवत्ता देखने तक का साहस किसी अफसर में नहीं है, जिससे ऐसी-ऐसी सड़कें बनी हैं, जो अंतिम भुगतान होने से पहले उखड़ चुकी हैं, ऐसा ही हाल भवनों का है। विकास कार्यों के लिए प्रति वर्ष सवा करोड़ रुपया विधायकों को भी मिलता है, जिसमें बीस लाख रुपया भी जमीन पर नहीं लगाया जाता, साथ ही विधायकों के इशारे पर गंगा की सहायक नदियों और प्राचीन तालाबों की बेशकीमती जमीनें भी कब्जा ली गई हैं। नियुक्तियों की बात करें, तो गरिमामयी आयोग के अध्यक्षों से लेकर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की नियुक्तियों तक में सरकार की फजीहत होती रही है। नियुक्तियों को लेकर उत्तर प्रदेश में एक चुटकुला बेहद चर्चा में है कि यहाँ आवेदन, परीक्षा, साक्षात्कार के साथ उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय तक की औपचारिकता पूर्ण करनी पड़ती है। शुद्ध पेयजल की तो उत्तर प्रदेश में कोई चर्चा तक नहीं करता। बिजली अव्यवस्था ने समूचे प्रदेश में हाहाकार मचा रखा है। भ्रष्टाचार से हर आदमी प्रभावित हो रहा है, इन सब मुददों पर प्रदेश के प्रत्येक आम आदमी की न सिर्फ गहरी नजर है, बल्कि वह भोग भी रहा है, त्रस्त है, पर कुछ कह भी नहीं पा रहा, इसलिए भाजपा को इन मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए, जिसका उत्तर समाजवादी पार्टी के पास नहीं होगा।

बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती जब भी प्रेस कांफ्रेंस करती हैं, वे आम आदमी से जुड़े मुददे पर बात करती हैं, कानून व्यवस्था और भ्रष्टाचार की बात करती हैं, जिससे समाजवादी पार्टी तिलमिला उठती है, लेकिन भाजपा हिंदू-मुस्लिम की बात कर के समाजवादी पार्टी को और ताकत दे देती है, क्योंकि हिंदू-मुस्लिम के मुददे के नीचे सरकार की बड़ी-बड़ी कमियां दब जाती हैं और सरकार द्वारा प्रचारित कराये जा रहे विकास कार्य चमक उठते हैं, इसलिए भाजपा को बसपा की नीति अपनानी चाहिए, क्योंकि उत्तर प्रदेश में भाजपा का मुकाबला कांग्रेस से नहीं, बल्कि समाजवादी पार्टी से है।

भाजपा को बिहार, तमिलनाडू और पश्चिम बंगाल के विधान सभा चुनावों से सबक लेना चाहिए, इन राज्यों में कांग्रेस नहीं थी, तो भाजपा वहां टिक नहीं पाई, क्योंकि कांग्रेस किसी जाति, धर्म और वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करती, साथ ही सोनिया गाँधी के अध्यक्ष बनने के बाद कांग्रेस राष्ट्रीय मुददों से दूर जाती रही है। कांग्रेस के मुकाबले भाजपा दक्षिणपंथी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए कांग्रेस लगातार मात खा रही है, लेकिन क्षेत्रीय दलों की मूल शक्ति ही जाति और धर्म हैं।

भाजपा जाति और धर्म के मुददे पर क्षेत्रीय दलों से उलझेगी, तो उल्टा मात ही खायेगी।

बी.पी. गौतम

मुद्दे की बात

कुदनकुलम परमाणु विद्युत संयंत्र-2

नाभिकीय विद्युत की सफलता का परचम..

अमृतेश श्रीवास्तव
मीडिया मैनेजर
एनपीसीआईएल, मुंबई

हाल में ही अफ्रीकी देशों के दौरे के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और उनके राष्ट्राध्यक्षों के प्रगाढ़ संबंधों और परमाणु एवं अन्य मुद्दों से जुड़े कई महत्वपूर्ण मसलों पर बनते नये आयामों के बीच 10 जुलाई 2016 की शाम 8 बजकर 56 मिनट पर एक ऐसा ऐतिहासिक पल आया जिस पल के इंतजार में हिन्दुस्तान की जनता काफ़ी समय से पलक बिछाए तैयार खड़ी थी।।।मौका था कुदनकुलम परमाणु बिजली घर की दूसरी इकाई के प्रथम बार क्रिटिकल होने का।(एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें पहली बार परमाणु बिजली घर में न्यूक्लियर फिशन की चेन रिएक्शन शुरू होती है।) जी हां ये वही अदभुत पल था जिस पर संपूर्ण विश्व की भी निगाहें लगी हुई थी। भारत के मित्र राष्ट्र रूस के सौजन्य से निर्मित 1000 मेगावाट की दूसरी इकाई, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, तमिलनाडु प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व ए ई आर बी के दिशा निर्देशों और विभिन्न प्रकार के मानदंडों पर खरा उतरने के बाद क्रिटिकल किया गया। इस ऐतिहासिक मौके पर भारतीय अभियंताओं और वैज्ञानिकों के साथ साथ रशियन अधिकारियों की भी उपस्थिति रही जिनके दिन रात के अनवरत प्रयासों से ये संभव हो सका।

शुरूवाती चरण में लगभग 30 से 45 दिनों के बाद, इसको 400 मेगावाट के पावर आउटपुट के साथ दक्षिणी ग्रिड से जोड़ा जाएगा और बाद में ए ई आर बी द्वारा विभिन्न प्रकार के मानदंडों पर खरा उतरने के पश्चात इसकी क्षमता को चरणबद्ध तरीके से धीरे धीरे 50, 75, 90 और 100 प्रतिशत बढ़ाकर 1000 मेगावाट कर दिया जाएगा और लगभग 4 से 6 महीने के भीतर इसका व्यावसायिक परिचालन शुरू हो जाएगा। कुदनकुलम परमाणु बिजली घर की दूसरी इकाई के शुरू हो जाने के साथ ही भारत में परमाणु बिजली घरों की संख्या बढ़कर 22 हो गयी है और कुल उत्पादन भी 5780 मेगावाट से बढ़कर शीघ्र ही 6780 मेगावाट तक पहुँच जाएगा और आगामी वर्ष 2023 तक 13000 मेगावाट विद्युत उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। भारत में बढ़ती बिजली समस्या के चलते कुदनकुलम परमाणु बिजली घर की दूसरी इकाई का भी बन के तैयार हो जाना और जल्द ही बिजली उत्पादन में योगदान देना, कई मायनों में उभरते भारत के लिए एक नयी जगमगाहट की तरह है। रूस के सहयोग से निर्मित ये भारत का यह दूसरा लाइट वॉटर रिएक्टर(वी वी ई र प्रकार का) होगा जिस से बिजली का निर्माण किया जाएगा। सुरक्षा और संरक्षा की दृष्टि से बेहतरीन व बेमिसाल खूबियों से युक्त जेनरेशन - 3 प्लस के इस रिएक्टर की संरक्षा संबंधी कई खूबियाँ इसे अपने तरीके का एक सर्वश्रेष्ठ रिएक्टर बनाती हैं। इस विश्व स्तरीय रिएक्टर में कोर केचर, हाइड्रोजन री-कॉबाइनर्स, पैसीव हीट रिमूवल सिस्टम, हाइड्रो एक्यूमुलएटर्स इत्यादि ऐसे कई खूबियाँ हैं, जो इसे जनता और पर्यावरण दोनो को समान रूप से सुरक्षा प्रदान करने में मदतगार साबित होंगे।

प्रारंभ में इस परियोजना से 400 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाएगा और धीरे धीरे चरण बध्द तरीके से इसकी क्षमता बढ़ाकर पहले 500, 750, 900 और फिर 1000 मेगावाट की जाएगी। अगले कुछ समय के दौरान लगभग 39500 करोड़ के लागत से 1000 मेगावाट की क्षमता वाली तीसरी और चौथी इकाइयों में भी निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा जिससे आने वाले वर्षों में ज़्यादा से ज़्यादा बिजली का निर्माण किया जा सकेगा और बड़े पैमाने पर दक्षिण समेत देश के कई राज्यों को बिजली मिल सकेगी और लोगों को इसका फ़ायदा मिलेगा। विदित हो कि अभी 4 रुपये की दर से, 1000 मेगावाट बिजली मे से 562।5 मेगावाट बिजली तमिलनाडु राज्य के लिए, 221 मेगावाट बिजली कर्नाटक के लिए, 50 मेगावाट बिजली आंध्र प्रदेश के लिए, 133 मेगावाट बिजली केरल और 33।5 मेगावाट बिजली पुडुचेरी के लिए सुनिश्चित की जा रही है।

एक तरफ जहाँ भारत में विभिन्न ऊर्जा के स्रोतों से बिजली का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है, जिसमे लगभग 68 प्रतिशत बिजली थर्मल से, 15 प्रतिशत हाइड्रो से, 14 प्रतिशत अन्य स्रोतों से जिनमे (बायो मास, सोलर और विंड प्रमुख हैं) वहीं परमाणु ऊर्जा से महज 3 प्रतिशत ही बिजली का उत्पादन होता है। आज संपूर्ण विश्व में थर्मल पावर से निर्मित बिजली ग्लोबल वॉरमिंग और वातावरण में उत्सर्जित होने वाली कई हानिकारक गैसों के चलते एक गहन चिंता का विषय बनी हुई है, जबकि वहीं दूसरी तरफ परमाणु ऊर्जा एक स्वच्छ और हरित ऊर्जा का किफायती विकल्प साबित हो रही है। अगर आज हम संपूर्ण विश्व की बात करें तो फ्रांस जैसे देश में परमाणु ऊर्जा से लगभग 74 प्रतिशत बिजली का निर्माण किया जाता है।

ना केवल फ्रांस बल्कि बेल्जियम, स्वीडेन, हंगरी, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड ,अमेरिका, रूस, इत्यादि कई ऐसे विकसित देश हैं जहाँ पर लगभग 20-50 प्रतिशत बिजली परमाणु ऊर्जा से ही निर्मित होती है और आज इन देशों की संपन्नता और समृद्धि किसी से छिपी नही है। इसके विपरीत हमारे देश में वर्तमान में जहाँ एक ओर कुल 3 लाख मेगावाट बिजली का ही उत्पादन हो रहा है जिसमे से महज 5780 मेगावाट ही न्यूक्लियर पावर से बनाई जाती है, ऐसे में ज़रा सोचिए कि परमाणु ऊर्जा में अभी कितनी क्षमता है? कोयले के भंडार सीमित हैं, हाइड्रो को हमने पूरी तरह से लगभग दोहन कर लिया है, और सोलर और विंड की उत्पादन क्षमता, ज़्यादा जगह, धूप और हवा के प्रवाह की समुचित उपलब्धता पर निर्भर होने के साथ साथ कम किफायती और अल्प विकसित तकनीक पर आधारित हैं।

इस से ये साफ दिखाई देता है की परमाणु ऊर्जा से बिजली निर्माण की संभावना को हम कतई नकार नही सकते। आज हिन्दुस्तान में सभी परमाणु बिजली घर सुरक्षित प्रचालन के गौरव के साथ पिछले 47 वर्षों से अनवरत कार्यशील हैं, और जिनसे लगभग 5780 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। आज तक हमारे देश में कोई ऐसी दुर्घटना नही हुई है, जिसमें लोगों को रेडीयेशन की निर्धारित मात्रा से ज़्यादा डोज़ लगी हो। यहाँ तक की भुज में आए भूकंप और तमिलनाडु में सुनामी के आने के बावजूद हमारे देश के परमाणु बिजली घर सुरक्षित रहे, जो इस बात का सबूत है की विषम से विषम परिस्थितियों में भी परमाणु बिजली घर सुरक्षा की दृष्टिकोण से सर्वश्रेष्ठ हैं।

विश्व के तमाम विकसित राष्ट्रों ने इसे खुले दिल से अपनाया है और आज वो किस मुकाम पर हैं शायद ये बताने की मुझे आवश्यकता नही है। मगर उस के लिए हमें इसकी बारीकियों को समझना होगा और इस के विरोध में लगे लोगों को समझाना होगा कि अगर हम त्रि-चरणीय परमाणु कार्यक्रम को चरणबध तरीके से लागू कर पाने में सफल रहे और देश में प्रचुर मात्रा में मौजूद थॉरियम से बिजली बनाने की तकनीक को विकसित कर, सही तरह से उपयोग में ला सके तो शायद आने वाली कई पीढ़ियों को सैकड़ों साल तक बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। आज हिन्दुस्तान जिस मुकाम पर आकर खड़ा है उसे अभी बहुत फ़ासले तय करने होंगे। राह अभी मुश्किल है लेकिन जज़्बे और हौसलों में कोई कमी नही है। कमी है तो सिर्फ़ उस मानसिकता को अपने अंदर से निकाल फेंकने की जो शायद हमारे आने वाले कल की रह में रोड़ा बन के खड़ी है। ये आपको निर्णय लेना है की आने वाले सपनों का भारत कैसा हो? फ़ैसला आप पर छोड़ता हूँ। फिलहाल सभी देश वासियो को कुदनकुलम परियोजना की दूसरी इकाई के क्रिटिकल होने के लिए अनेक अनेक बधाई।

ढाका हमला फराज हुसैन की बहादुरी की याद दिलाता रहेगा

जैसे-जैसे ढाका नरसंहार की यादें धुंधली हो रही हैं, बहादुरी के उदाहरण सामने आ रहे हैं। इनमें से एक है फराज हुसैन का उदाहरण। अमेरिका में उच्च शिक्षा ले रहा फराज छुट्टियों में ढाका आया हुआ था। उसने घर पर कम समय बिताया और इस मौके का ज्यादा इस्तेमाल गुलशन के प्रसिद्ध स्पेनी रेस्तरां होले आर्टिजन बेकरी में विदेशी माहौल से आए दोस्तों से मिलने में किया।

आईएसआईएस के आतंकियों ने हमला किया तो फराज अपने दोस्तों के साथ रेस्तरां में भोजन कर रहा था। हथियार चलाने से पहले आईएसआईएस के हत्यारे बांग्लादेशियों को बाकी लोगों से अलग कर रहे थे। वे उस टेबल के पास आए जिस पर फराज बैठा था। फिर उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह बांग्लादेशी है और जब उसने हां कहा तो उसे दूसरी ओर अलग धकेल दिया और बाकी लोगों से उनकी राष्ट्रीयता पूछने लगे। जब फराज को छोड़कर सभी ने कहा कि वे गैर-बांग्लादेशी हैं, तो उन्होंने उनके पास जो एकमात्र बंदूक थी उससे गोली चला दी। फराज ने इसका विरोध किया और कहा कि वह अपने दोस्तों की टोली का हिस्सा है और नहीं चाहता कि उसके साथ बाकी लोगों से अलग व्यवहार हो। आतंकियों ने कहा कि अगर वह अलग खड़ा नहीं होना चाहता तो उसे भी मार दिया जाएगा। फराज ने अपने विदेशी दोस्तों के साथ, उनकी बगल में खड़ा होना पसंद किया। उसे पता था कि इसकी कीमत मौत भी हो सकती है। आतंकियों ने कोई दया नहीं दिखाई और सभी को मार डाला। आज जब ढाका के नरसंहार को याद किया जा रहा है तो लोग फराज के साहस की चर्चा कर रहे हैं। शायद उनके माता-पिता और दादा-दादी, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूं.. के लिए यही एक इनाम है। वास्तव में, मैंने ढाका में उनके घर रात का भोजन किया है। वे लोग सादी और बिना ताम-झाम की जिंदगी जीते हैं। मैं फराज से उसके दादा-दादी के घर पर मिला था मुझे याद है कि हम लोगों ने अमेरिका के बारे में बात की जहां नार्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में मैं पत्रकारिता में एमएससी की डिग्री लेने गया था। वह स्वभाव में अपरिपक्व था, लेकिन अमीर परिवार से होने के बावजूद वह विचारों से मजबूत था। उसे अहंकार नहीं था। वह भारत के बारे में जानने की जिज्ञासा रखता था। उसने बताया था कि छुट्टी मिलने पर वह भारत जाएगा। वह हमारी मिली-जुली संस्कृति से प्रभावित था और चाहता था कि बांग्लादेश भी इसे अपनाए क्योंकि वहां भी हिंदुओं की बड़ी संख्या है, करीब एक करोड़ बीस लाख, जो बांग्लादेश को भारत और नेपाल के बाद दुनिया में हिंदुओं का तीसरा बड़ा देश बनाती है। मैंने उसकी हत्या की सारी जानकारी ली है। इसमें कोई शक नहीं कि फराज ने अपनी जान अपने उन विदेशी दोस्तों के लिए कुर्बान कर दी जो आतंकियों के निशाने पर थे। इससे नरसंहार की क्रूरता कम नहीं होती, लेकिन यह विश्वास से भरी बहादुरी का मिसाल पेश करता है। बेशक, बांग्लादेश के हर घर में बहुत सम्मान के साथ उसका नाम लिया जा रहा है और उसके साहस का उदाहरण दिया जा रहा है, लेकिन व्याकुल माता-पिता और दादा-दादी को कभी भी सांत्वना नहीं दी जा सकती। एक होनहार बच्चे को परिवार ने खो दिया।

पूरब में बलिदान का ऐसा एकमात्र उदाहरण नहीं है। यह पूरब की अनोखी मान्यता है। लोगों को उनके धन के आधार पर नहीं तौला जाता है, जैसा पश्चिम में होता है। महात्मा गांधी ऐसा ही एक उदारहण हैं। इसके बजाए कि उन्हें धन या ज्ञान के लिए जाना जाता, जब कि दोनों चीजों तक उनकी पहुंच थी, उन्होंने खुद को %नंगा फकीर% कहलाना पसंद किया, जैसा उन्हें पश्चिम में चित्रित किया जाता था। पश्चिम गांधी जी के अहिंसक आंदोलन को समझ या सराह नहीं सकता। सैंकड़ों स्वयंसेवक दांडी में कानून तोड़कर नमक बनाने समुद्र किनारे पहुंच गए और उन्होंने पुलिस की लाठी का प्रहार झेला, लेकिन बदले में हाथ नहीं उठाया क्योंकि यही उनके आंदोलन का आदर्श था। भले ही फराज गांधी का समर्थक नहीं हो, लेकिन उसने उनकी भावना और अनुशासन का प्रतिनिधित्व किया। भारत में जहां भी फराज का नाम लिया गया है, लोग गांधी का नाम बीच में लाते हैं। मुझे कोई शक नहीं है कि अगर गांधी जी जिंदा होते तो वह पीड़ितों के शहर ढाका जाते, जिस तरह वह कलकत्ते में हिंदु और मुसलमानों के भयानक दंगा भड़कने के बाद नोआखली गए थे। वे फराज जैसे लोगों की तारीफ करते जो उदार विचारों, खूबसूरती और आत्म बलिदान का प्रतिनिधि था। जिस तरह पूरे भारत में भगत सिंह की प्रतिमा स्थापित की गई है, फराज को भी पूरे उपमहाद्वीप में याद किया जाना चाहिए और मुझे विश्वास है कि लोग सिर्फ बांग्लादेश में नहीं, भारत और दूसरी जगहों में भी अपने बच्चों का नाम उसके नाम पर रखेंगे। कम से कम स्कूली किताबों में एक अध्याय उसके %नाम पर होना चाहिए, हिंदु-मुस्लिम एकता को आगे बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि इसके लिए कि नौजवान फराज पर गर्व करें। वे बुजुर्गों से कह सकें कि फराज जैसे व्यक्ति ने युवाओं की सच्ची और साथ ही, पूरब की संस्कृति और इसकी मान्यताओं का उदाहरण पेश किया है। मुझे अचरज है कि फराज के गैर-बांग्लादेशी दोस्त उसे किस तरह याद कर रहे हैं। उन्हें फराज का उदाहरण अपने-अपने देशों में फैलाना चाहिए, ताकि दूसरे धर्मों और नस्ल के लोग इस पर गौरव महसूस करें कि किस तरह एक साधारण युवक अपने दोस्तों के साथ खड़ा रहा जब कि वह आसानी से मौत का शिकार होने से बच सकता था। इसका कोई लेना-देना नहीं है कि आप किसी मजहब के हैं, लेकिन यह हर धर्म के मूल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है, संकीर्ण विचारों से ऊपर उठना और पूरी मानवता की चिंता करना। दुर्भाग्य से, संकीर्ण विचारों से ऊपर उठने और दुनिया के सामने उदाहरण बनने के बदले, भारत सतही तत्वों के प्रचार का शिकार हो गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शासन के आने के बाद से, संकीर्णतावादी पार्टी पूरे देश का प्रतिनिधितत्व करने का प्रयास कर रही है। औरतों की प्रताड़ना की कहानी लिखने के बाद बांग्लादेश से निर्वासित कर दी गई तस्लीमा नसरीन ने मुसलमानों से आत्ममंथन के लिए और यह वजह जानने के लिए कहा है कि वे किसी तरह धर्म की मूल भावना से भटक गए हैं। फराज ने इस तरह के विचार का जरूर समर्थन किया होता। हम इस पर विचार करें कि यही एक ऐसा विचार है जो सही, तार्किक और मानवीय है। हिंदु, मुसलमान, सिख और ईसाइयों के उग्रपंथियों को यह महसूस कराया जाए कि भारत एक सहनशीलता वाला देश है और जो लोग समुदायों के बीच के समीकरण को बिगाड़ने का प्रयास कर रहे हैं वे भारत और यह जिन चीजों के लिए बना है उसे विकृत कर रहे हैं।

कुलदीप नैयर

आईएसआईएस के आतंकियों ने हमला किया तो फराज अपने दोस्तों के साथ रेस्तरां में भोजन कर रहा था। हथियार चलाने से पहले आईएसआईएस के हत्यारे बांग्लादेशियों को बाकी लोगों से अलग कर रहे थे। वे उस टेबल के पास आए जिस पर फराज बैठा था। फिर उन्होंने उससे पूछा कि या वह बांग्लादेशी है और जब उसने हां कहा तो उसे दूसरी ओर अलग धकेल दिया और बाकी लोगों से उनकी राष्ट्रीयता पूछने लगे। जब फराज को छोड़कर सभी ने कहा कि वे गैर-बांग्लादेशी हैं, तो उन्होंने उनके पास जो एकमात्र बंदूक थी उससे गोली चला दी। फराज ने इसका विरोध किया और कहा कि वह अपने दोस्तों की टोली का हिस्सा है और नहीं चाहता कि उसके साथ बाकी लोगों से अलग व्यवहार हो। आतंकियों ने कहा कि अगर वह अलग खड़ा नहीं होना चाहता तो उसे भी मार दिया जाएगा।